विचार बिन्दु

आशा प्रयत्नशील मनुष्य का साथ कभी नहीं छोड़ती। –गेटे

वन विभाग राजस्थान द्वारा संकटापन्न प्रजाति गुग्गुलु का संरक्षण व पुनर्स्थापन

गुग्गुलु एक ऐसी औषधि है जिसको भारत के महर्षि वैज्ञानिक आचार्य अग्निवेश से लेकर आचार्य शाङ्र्गधर तक 5000 साल के समय काल में सब ने एक स्वर से उच्चकोटि का रसायन कहा है। आधुनिक वैज्ञानिक शोध भी इस बात की पुष्टि करती है। आयुर्वेद की इस औषधि पर भारत में सर्वप्रथम 1950 के दशक में शोध प्रारंभ हुई थी जो आज पूरे विश्व में हो रही है। देश की सबसे संकटापन्न प्रजातियों में से एक, गुग्गुलु के संरक्षण, प्रबंध और पुनर्स्थापन में वनविभाग राजस्थान का महत्वपूर्ण योगदान है। पिछले 10 वर्षों में राजस्थान वन विभाग ने इस प्रजाति के लगभग 3,00,000 पौधे रोपित किए हैं और इसके साथ ही प्राकृतिक पुनर्स्थापन को बढ़ावा दिया है। यह एक ऐसी संकटापन्न प्रजाति (आईयूसीएनरेडलिस्ट के अनुसार क्रिटिकलीएंडैनजर्ड) है जो अब मुख्य रूप से राजस्थान में और छिट-पुट रूप से गुजरात, मध्य प्रदेश आदि के वनों में ही मिलती है। दुनिया के अन्य भागों में यह प्रजाति नहीं पाई जाती। इस वर्ष भी इस प्रजाति को खोज कर असिस्टेड नेचुरलरी जेनरेशन के माध्यम से बढ़ावा दिया जा रहा है। इस प्रजाति पर उच्च कोटि की शोध भी एरिडफॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट जोधपुर द्वारा की गई है और उस ज्ञान का प्रयोग भी वन विभाग द्वारा इस प्रजाति के प्रबंध और संरक्षण में किया जा रहा है। इस पर आगे चर्चा करने के पहले आइये वनों में प्राप्त होने वाली औषधियों की स्थिति देखते हैं।

लगभग 95 प्रतिशत आयुर्वेदिक औषधियाँ पौधों से ही प्राप्त होती हैं और इन औषधीय पौधों का विदोहन प्राय: प्राकृतिक वनों से ही किया जाता है। कुल वैश्विक वार्षिक खपत का केवल 10 से 20 प्रतिशत हिस्सा ही खेती द्वारा प्राप्त किया जाता है। ट्रैफिक इन्टरनेशनल का अध्ययन बताता है कि अभी तो यूरोप जैसे विकसित भू-भाग में भी 90 प्रतिशत औषधीय पौधे प्राकृतिक वनों से ही एकत्रित किये जाते हैं। विश्व में हर्बल औषधियों का बहुत बड़ा बाजार है। करीब 60 हजार औषधीय प्रजातियों से 6 से 7 लाख टन पदार्थ और कच्चा माल प्राप्त किया जाता है। वर्ष 2014 में औषधीय पौधों के वैश्विक व्यापार का मूल्य 33 अरब डालर आँका गया था। एक शोध के अनुसार चौदह वर्षों की अवधि के लिये औषधीय पौधों में औसत वैश्विक निर्यात प्रति वर्ष 6,01,357 टन और 1.92 अरब डॉलर था। वर्ष 2014 के लिये यह 7,02,813 टन तथा 3.60 अरब डॉलर आँका गया था। हाल के अनुमानों के अनुसार वर्ष2020 में हर्बल मेडिसिन का कुल वैश्विक बाज़ार 98.60 बिलियन अमेरिकी डॉलर था और 2028 तक इसके 391.22 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।

इंडिया ब्रैंडइक्विटी फाउंडेशन के आंकड़े बताते हैं कि भारत में औषधीय पौधों का बाजार वर्ष 2019 में रुपये 4.2बिलियन (56.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) आँका गया है जो 38.5 प्रतिशत की दर से बढ़कर वर्ष 2026 तक रुपये 14 बिलियन (188.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर) होने का अनुमान है। कुल विश्व हर्बल व्यापार वर्तमान में 120बिलियन अमेरिकी डॉलर आंका गया है। आयुर्वेद की जड़ी-बूटियों और जड़ी-बूटियों के मूल्य-वर्धित एक्सट्रैक्ट्स का व्यापार भी बढ़ रहा है। उदाहरण के लिये वर्ष 2017-2018 में भारत ने पिछले वर्ष की तुलना में 14.22प्रतिशतकी वृद्धि के साथ 330.18 मिलियन अमेरिकी डॉलर की जड़ी-बूटियों का निर्यात किया था। साथ ही मूल्य-वर्धित एक्सट्रैक्ट्स का निर्यात 456.12 मिलियन अमेरिकी डॉलर था,जो पिछले वर्ष की तुलना में 12.23 प्रतिशत की वृद्धि दिखाता है।

विश्व-प्रसिद्ध औषधि गुग्गुलु राजस्थान के वनों उष्णकटिबंधीय शुष्क वनों तथा मरुस्थलीय पारस्थितिकीय तंत्रों की एक अति महत्वपूर्ण परन्तु सर्वाधिक संकटापन्न लघु वृक्ष प्रजाति है। यों तो यह कुछ अन्य क्षेत्रों में भी मिलता है पर राजस्थान का गुग्गुलु सर्वश्रेष्ठ है। देवीकोट (जैसलमेर) और पलाना (बीकानेर) में उगने वाले गुग्गुलु के पौधों में गुग्गुलस्टेरोन की मात्रा हरियाणा व गुजरात में उगने वाले पौधों की तुलना में बेहतर मिली है (देखें, ए. कुलहरि इत्यादि, फिजियोलॉजी एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी ऑफ़ प्लांट्स, 21: 71-81, 2015)। गुग्गुल स्टेरोन में कोलेस्ट्रॉल कम करने तथा भूख को नियंत्रित करने के साथ-साथ इम्यूनोमॉड्यूलेटरी गतिविधि पायी जाती है इसीलिये यह बहु-उपयोगी औषधि कोविड-19 महामारी के दौरान लाभप्रद हो सकती है। कोविड-19 रोगियों में साइटोकाइन स्टॉर्म से होने वाले हाइपर इन्फ्लेमेशन को रोकने में गुग्गुलु उपयोगी हो सकता है। गुग्गुल स्टेरोन साइटोकाइन तूफान की गंभीरता को कम कर सकता है (देखें, एल. प्रीति इत्यादि, ओबेसिटी मेडिसिन, 24: आर्टि. 100346, 2021)।

औषधियों के रूप में प्रयुक्त होने वाले पौधों की अधिकाँश जरूरत वनों से ही पूरी की जा रही है। अतः ऐसी रणनीति बनाना आवश्यक है जिसमें औषधीय प्रजातियों का न केवल वनों में यथा-स्थान संरक्षण हो, अपितु उनका डोमेस्टिकेशन किया जाकर खेती का अंग बनाया जाये। औषधीय पौधों की प्रजातियों के विलुप्त होने के बाद उन पर उपलब्ध ज्ञान की सार्थकता शेष नहीं रह पायेगी।

पिछले कई दशकों से अति-विदोहन और विनाशकारी-विदोहन के कारण पुनरुत्पादन में कमी होने से गुग्गुलु के पौधों का प्राकृतिक पौध-संख्या घनत्व राजस्थान में निरंतर गिर रहा है। हालत यहाँ तक आ पहुँची है अब इस प्रजाति के मात्र चार हॉट-स्पॉट्स ही बचे हैं। सबसे अधिक घनत्व 105.9 पौधे/ हेक्टेयर सवाई माधोपुर के कुछ क्षेत्रों में और सबसे कम 1.6 पौधे/ हेक्टेयर झालावाड़ जिले में मिले हैं। पहाड़ी ऊंचाई के अनुसार भी गुग्गुलु की प्राकृतिक संख्या घनत्व में भिन्नता मिली है। अधिकतम घनत्व 40 पौधे /हेक्टेयर मुख्य रूप से अरावली रेंज में समुद्र तल से 301-350 मीटर ऊंचाई सीमा में है, और ज्यादा ऊंचे (समुद्र तल से 350 मीटर) और कम (समुद्र तल से 301 मीटर) ऊंचाई पर घनत्व कम मिला है (देखें, यू.के. तोमर इत्यादि, जर्नल ऑफ़ एप्लाइड रिसर्च ऑन मेडिसिनल एंड एरोमेटिकप्लांट्स, 25, आर्टि. 100323, 2021)।

गुग्गुलु से रेसिन प्राप्त करने के लिये विनाशकारी-विदोहन पद्धति के कारण यह प्रजाति अब गंभीर रूप से संकटापन्न है और रेड-लिस्ट में सूचीबद्ध हो गयी है। औषधीय रेसिन निकालने के लिये कटान, वनों में पशुओं द्वारा चराई आदि के कारण वनों में गुग्गुलु का प्राकृतिक पुनरुत्पादन बहुत कम हो रहा है। इस अति-विदोहन के परिणामस्वरूप भारत में गुग्गुलु ओलियो-रेसिन के उत्पादन में भारी गिरावट आई है। राजस्थान में गुग्गुलु के विदोहन पर प्रतिबन्ध लगाना पड़ा है। अन्य राज्यों का उदाहरण देखें तो गुजरात, जो कि उत्पादन का एक प्रमुख क्षेत्र रहा है, में वर्ष 1963 में उत्पादन 30 टन था जो वर्ष 1999 में गिरकर मात्र 2.42 टन रह गया। वर्ष 2013 में यह मात्र 1.6 टन रह गया। नतीजा यह है कि अब गुग्गुलु का पाकिस्तान से भारत में लगभग 505 टन /वर्ष आयात किया जाता है। इसका उपयोग कर अनुमानित रूप से 193 टन प्रति वर्ष समतुल्य प्रसंस्कृत उत्पादों का निर्माण कर भारत से 42 देशों को निर्यात किया जाता है (देखें,ए.बी. कनिंघम इत्यादि, जर्नल ऑफ़ एथनोफार्माकोलॉजी, 223: 22-32, 2018)। अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिये वाणिज्यिक विदोहन के कारण गुग्गुलु के पौधों की संख्या में आ रही निरंतर गिरावट चिंताजनक है और वनों में व्यावहारिक संरक्षण, संवर्धन और पुनरुत्पादन तथा निजी जमीनों में खेती को बढ़ावा देने की तत्काल आवश्यकता है।

जहाँ तक गुग्गुलु की खेती का प्रश्न है, कुछ पहल 45 साल पहले हुई थी। राजस्थान में मंगलियावास के पास एक गुग्गुल हर्बल फार्म शुरू किया गया था। एक परियोजना और थी जिसका लक्ष्य 1,700 हेक्टेयर में गुग्गुलु की खेती करना था। राजस्थान के सभी जिलों में गुग्गुलु को नर्सरी में तैयार कर वितरण के लिये लगभग पांच लाख पौधे उगाना लक्ष्य था। लेकिन निजी जमीनों पर खेती के साथ साथ सर्वाधिक महत्वपूर्ण यह है कि गुग्गुलु को वनों में संरक्षित और संवर्धित किया जाये। जैसा कि पूर्व में बताया गया है, वन विभाग द्वारा पौधे उगाने तथा वृक्षारोपण में लगाने हेतु कुछ प्रयास हुये हैं लेकिन इस ओर मजबूती से ध्यान देना आवश्यक है ताकि हमारी यह एंडेमिक प्रजाति राजस्थान से विलुप्त ना हो जाये। इस विषय में क्रियान्वयन अब वन विभाग की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है।

प्राकृतिक वनों से लगातार दोहन के साथ-साथ अब जलवायु परिवर्तन,पर्यावरण प्रदूषण और निर्वनीकरण के कारण जड़ी-बूटियों की जैव-विविधता का विनाश औषधीय पौधों पर भारी संकट है। भारत के वन औषधियों के भंडार हैं। औषधीय पौधों की बड़े पैमाने पर वनों के बाहर खेती एवं एवं वनों के अन्दर जैव-विविधता संरक्षण और प्रबंध के बिना आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध, सोवा रिग्पा, प्राकृतिक चिकित्सा, और होम्योपैथी के 7.5 लाख आयुष चिकित्सकों का विशाल वैज्ञानिक और अनुभवजन्य ज्ञान धरा रह जायेगा।

पिछले 25 वर्षों की शोध के निष्कर्ष यह बताते हैं कि जलवायु परिवर्तन की दशा में भारत के वनों का वर्तमान भौगोलिक वितरण, प्राकृतिक पुनरुत्पादन, पुष्पन, फलन एवं बीजोत्पादन आदि में गंभीर अन्तर आ सकता है। भारतीय वनों पर इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ साइन्स, बेंगलूरु द्वारा की गयी शोध से ज्ञात होता है कि जलवायु एवं मानसून में परिवर्तन की दशा में भारतीय वनों पर गंभीर कुप्रभाव पड़ने वाला है। यह कुप्रभाव तब और गंभीर हो जाता है जब मानवजनित कारणों, जैसे अति-विदोहन आदि के कारण औषधीय प्रजातियाँ संकटापन्न होती जा रहीं हैं।

आयुर्वेदिक औषधियों के बिना आयुर्वेद की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। आयुर्वेद-चिकित्सा के चार पादों में चिकित्सक के पश्चात औषधि का ही महत्व है। संकटापन्न पौधों की रेड-लिस्ट के अनुसार, भारत विश्व के उन दस देशों में शामिल है जहाँ पौधों की सर्वाधिक प्रजातियाँ संकटापन्न हैं। हालांकि भारत ने अपने 385 संकटापन्न पौधों की प्रजातियों की समस्या को हल करने की ओर कदम तो उठाया है, किन्तु अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

औषधियों के रूप में प्रयुक्त होने वाले पौधों की अधिकाँश जरूरत वनों से ही पूरी की जा रही है। अत: ऐसी रणनीति बनाना आवश्यक है जिसमें औषधीय प्रजातियों का न केवल वनों में यथा-स्थान संरक्षण हो, अपितु उनका डोमेस्टिकेशन किया जाकर खेती का अंग बनाया जाये। औषधीय पौधों की प्रजातियों के विलुप्त होने के बाद उन पर उपलब्ध ज्ञान की सार्थकता शेष नहीं रह पायेगी। जिन प्रजातियों की खेती की विधियाँ केन्द्रीय औषधि एवं सगंध पादप संस्थान, लखनऊ द्वारा विकसित की गयी हैं, उन्हें शीघ्र बड़े पैमाने पर खेती के लिये प्रोत्साहन देना आवश्यक है। आयुष फार्मा कंपनियों द्वारा बीज एवं खेती की तकनीक को किसानों तक पहुंचाया जाना अत्यन्त आवश्यक है। उगाई गयी फसल के वापस खरीदने की व्यवस्था को भी विकसित करना अनिवार्य है। लगभग 1000 औषधीय प्रजातियों के लिये समर्थन मूल्य घोषित किया जाना उपयोगी हो सकता है। समर्थन मूल्य के साथ-साथ विपणन के लिये देश के हर जिले में मंडियों एवं भण्डारण की भी समुचित व्यवस्था लाभकारी रहेगी। आयुर्वेदिक औषध शालाओं एवं किसानों के मध्य उपज खरीद का अनुबंध हो। इस प्रकार के अनुबंध से किसानों को अपनी उपज का सुनिश्चित बाजार तथा औषध शालाओं को उनकी आवश्यकता के अनुरूप उच्च कोटि के औषधीय पौधे प्राप्त हो सकते हैं।

एक महत्वपूर्ण रणनीति जो औषधीय प्रजातियों की निरंतरता एवं उपलब्धता सुनिश्चित करेगी वह यह भी है कि गांवों एवं शहरों के परिवारों द्वारा परंपरा से उगाये जा रहे होम गार्डन्स में इन पौधों को उगाया जाये। पूरे देश में घरेलू बाग़-बगीचों की परंपरा न केवल अत्यन्त प्राचीन है, अपितु अत्यंत लोकप्रिय भी है। इन होम गार्डन्स में अनेक प्रजातियां लोगों द्वारा अपनी जरूरत के मुताबिक उगायी जाती है। किंतु, यह परंपरा धीरे-धीरे क्षीण हो रही है, जिसे पुनर्जीवित करना उपयोगी है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

अधूरा चिकित्सा विज्ञान : स्तन कैंसर का सघन औषध उपचार

1979 में चिकित्सक स्तन कैंसर के बेहतर उपचार के लिए प्रयासरत थे, अनुसंधान कर रहे थे। स्तन कैंसर जो स्तन के बाहर फैल चुका हो, ऐसे कैंसर के लिए तब प्रचलित व मान्य औषध उपचार मात्र 10-15 प्रतिशत में ही कैंसर मुक्ति की राहत देता था और वह भी केवल कुछ समय के लिए। राहत की समयावधि बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रयास चल रहे थे, उनमें से एक था इन कैंसर रोधक औषधियों को अधिक मात्रा में देना। अपेक्षा थी कि अधिक मात्रा में देने पर ये कैंसर नाशक औषधियाँ शरीर में बची अधिक कैंसर कोशिकाओं को नष्ट कर पायेंगी और रोगिणी को दीर्घकालिक या पूर्णकालिक राहत मिलेगी। फैले हुए स्तन कैंसर की जितनी कम कोशिकाएँ शरीर में बचें उतना ही दीर्घकालिक लाभ, और अगर एक भी कोशिका न बचे तो पूर्णकालिक राहत।

लेकिन इसमें एक बड़ी दुविधा थी। कैंसर रोधक दवाएँ विभाजित होकर संवर्धन करने वाली कोशिकाओं पर असर कर उनका विभाजन रोकती हैं, उन्हें नष्ट करती हैं। कैंसर कोशिकाएँ तीव्र गति से अनियंत्रित विभाजन करने वाली कोशिकाएँ होती हैं अत: इन औषधियों से वे प्रमुख रूप में प्रभावित होती हैं। दुविधा ये थी कि शरीर की वे कोशिकाएँ भी प्रभावित और नष्ट होती थीं जो शरीर में सामान्य रूप में विभाजन-रत होती हैं। यथा बालों को निरंतर बढ़ाने वाली, आँतों के अंदर की ओर अस्थि-मज्जा में सतत रक्त कण सृजन करने वाली कोशिकाएँ। फलस्वरूप बाल झड़ जाते हैं, उल्टी-दस्त होते हैं और रक्त कण बनना बंद हो जाते हैं। पहले दो कुप्रभावों से तो पार पाया जा सकता था लेकिन अस्थिमज्जा का नष्ट होना घातक हो जाता था। रक्त कोशिकाओं का जीवनकाल सीमित होता है और अगर अस्थि मज्जा की स्टेम कोशिकाएँ विभाजित होकर इनकी पूर्ति न करें तो जीवन ही न चले। लाल रक्तकण न बनने से एनीमिया और श्वेत रक्तकण न बनने से घातक संक्रमण। शरीर की संक्रमण रोकने की प्रतिरोधक क्षमता (इम्यूनिटी) खत्म हो जाती थी। कैंसर से कहीं पहले रोगी संक्रमण की बलि चढ़ जाता था। संक्रमण रोकने के लिए एन्टीबायोटिक्स देने के बावजूद।

विषय विशेषज्ञ एक अनुसंधानकर्ता ने एक अभिनव प्रयोग सुझाया। अगर बड़ी मात्रा में कैंसर रोधक देने में अस्थि-मज्जा का नष्ट होना ही बाधा है तो क्यों न हम रोगी में अस्थि-मज्जा प्रतिरोपित (बोनमैरो ट्रांसप्लांट) करें। रक्त कैंसर के रोगियों, जिनमें अस्थि-मज्जा के रोग के कारण ही अस्थिमज्जा नष्ट होती थी, में बोनमैरो ट्रांसप्लांट किया जाता था। इस विधि का विकसित रूप था ओटोलोगस बोनमैरो या स्टेम सेल ट्रांसप्लांट। रोगी में दवा से अस्थि-मज्जा नष्ट करने या होने से पहले रोगी के रक्त से उन स्टेम कोशिकाओं को अलग कर इकट्ठा किया जाता जो रक्तकण बनाती हैं। सरलता से ऐसा करना संभव था। फिर जब अस्थि-मज्जा नष्ट हो जाये तब उसी व्यक्ति की ये स्टेम कोशिकाएँ उसमें वापस इन्जेक्ट

डॉ. श्रीगोपाल काबरा

कर दो। स्टेम कोशिकाएँ अपने नियत स्थान अस्थि-मज्जा में प्रतिरोपित होकर रक्त बनाने लगेंगी। यह हुआ ओटोलोगस (स्वयं का) स्टेम सेल ट्रांसप्लांट।

डॉ. गब्रल हार्टोबेगी ने यह विधि अपनाई। फैले हुए स्तन कैंसर में दीर्घकालिक राहत के लिए वे पहले रोगिणी के रक्त से स्टेम सेल अलग करते, फिर अधिक मात्रा में कैंसररोधक दवाएँ देते और नष्ट हुई अस्थि-मज्जा के घातक कुप्रभाव को रोकने को ट्रांसप्लांट करते। बोनमैरो ट्रांसप्लांट की सफलता का प्रचार हुआ। फैले हुए गंभीर स्तन कैंसर के दीर्घकालिक उपचार की नई विधि - हाई डोज कीमोथेरेपा विथ ओटोलोगस बोनमैरो ट्रांसप्लांट - उपलब्ध हुई, प्रचलन में आई। प्रचार हुआ कि लो डोज कीमोथेरेपी की तुलना में इस हाई डोज कीमोथेरेपी से 10-15 प्रतिशत की जगह 50-60 प्रतिशत में दीर्घकालिक कैंसर से राहत (रेमिशन) मिलती है। रोगियों का इस उपचार के प्रति आग्रह स्वाभाविक था।

दुविधा तब उत्पन्न हुई जब अमेरिका की इन्श्योरेंस कम्पनियों को इस खर्चीले इलाज के पैसे देने पड़े। इलाज बहुत मँहगा था। 1990 के दशक में तब एक महिला के इलाज का व्यय 60 लाख से 2 करोड़ रुपयों के बराबर था। चिकित्सकों में इस इलाज के लिए प्रतिस्पर्धात्मक उत्साह इस इलाज में मिलने वाली बड़ी रकम, अंधी कमाई, इसका आधार था। चिकित्सकों के मन में पूर्वाग्रह होना स्वाभाविक था। इन्श्योरेंस कम्पनियों ने इस इलाज के लिए इस आधार पर मना कर दिया कि यह विधि प्रायोगिक (एक्सपेरीमेंटल) है, इसकी सार्थकता का अभी विधिवत मूल्यांकन नहीं हुआ है, यह उपचार की मान्य विधियों में नहीं है।

अत: अनुसंधानकर्ताओं ने लो डोज कीमोथेरेपी और हाई डोज कीमोथेरेपी विथ बोनमैरो ट्रांसप्लांट विधियों का तुलनात्मक परीक्षण व मूल्यांकन का कार्य शुरू किया। स्तन कैंसर (लिम्फ ग्रंथियों में फैला हुआ) की पंजीकृत आधी महिलाओं को लो डोज कैंसर रोधक दवाएँ दी गईं और आधी का हाई डोज कैंसर रोधक दवाओं के साथ बोनमैरो ट्रांसप्लांट से उपचार किया गया। मूल्याकंन में पूर्वाग्रह (बायस व प्लेसीबो) को नकारने के लिए डबल ब्लाइन्ड प्रणाली अपनाई गई जिससे न तो महिला को मालूम हो कि उसमें कौनसी विधि काम में ली गई है और न ही मूल्यांकन करने वाले डॉक्टर को। चार अनुसंधान केन्द्रों ने अपने परिणाम प्रकाशित किए। तीन के परिणामों से साफ था कि हाई डोज विथ बोनमैरो ट्रांसप्लांट विधि से कोई अपेक्षाकृत दीर्घकालिक लाभ नहीं था। साथ ही हाई डोज और बोनमैरो ट्रांसप्लांट की घातक काम्प्लिकेशन्स भी थीं। लेकिन जोहान्सबर्ग से आये चौथे अनुसंधानकर्ता के परिणाम बाकी तीन के सर्वथा विपरीत थे। इसके अनुसार हाई डोज समूह के 60 प्रतिशत से अधिक रोगी 8 से 10 साल तक कैंसर मुक्त जीवन जी रहीं थीं जबकि लो डोज ग्रुप में यह प्रतिशत 20 भी नहीं था। कैंसर विशेषज्ञों और मरीजों में ऐसे ही प्रसारित परिणामों के कारण काफी उत्साह था। वरिष्ठ विशेषज्ञों के यह गले नहीं उतरा। विशेषज्ञों की एक टीम ने जोहान्सबर्ग जाकर जाँच की। सारा मामला फर्जी निकला। न ऐसा कोई अनुसंधान हुआ था और न ही ऐसे कोई मरीज मिले। कुछ मरीजों के रिकॉर्ड में फर्जीवाड़ा कर झूठे आँकड़े तैयार किए गए थे। बेआबरू होकर निकाले गए। चिकित्सा विज्ञान अधूरा विज्ञान है।

हर देश काल में तत्कालीन ज्ञान, अवधारणा, अनुभव और उपलब्ध तकनीक के अनुरूप चिकित्सक उपचार करते हैं और रोगी अपनी आस्था अनुरूप माँग करते हैं। समयोपरांत सब बदलता है। वैज्ञानिक मान्यताएँ समय सापेक्ष होती हैं, सही या गलत नहीं। बदलाव ही शाश्वत सच है।

–डॉ. श्रीगोपाल काबरा,
वरिष्ठ चिकित्सक, जयपुर

पूर्णिमा पर डिग्गी में उमड़े भक्त

मालपुरा, (निसं)। प्रदेश के सुप्रसिद्ध तीर्थस्थल डिग्गी में पूर्णिमा पर कल्याणधणी के दर्शनों के लिए शनिवार को आस्था का सैलाब उमडा। जन-जन की आस्था के केन्द्र डिग्गी कल्याणजी महाराज की मनमोहक झांकी की एक झलक पाने एवं पूर्णिमा पर दर्शनों का विशेष महत्व होने के चलते हजारों की संख्या में कल्याण भक्त डिग्गी पहुंचे।

अलसवेरे मंगला आरती से श्रद्धालुओं का आने का क्रम शुरू हुआ जो कि देर शाम संध्या आरती तक भी जारी रहा। ट्रस्ट की और से तैनात बॉक्सर व पुलिसकर्मियों ने श्रद्धालुओं को लम्बी कतारों में लगा दर्शनों की व्यवस्थाए की तो भीड में सीसीटीवी कैमरो से निगरानी भी रखी गई।

लम्पी बीमारी से गौवंश की रक्षा के लिये आयुर्वेदिक दवा तैयार की

कोटपूतली, (निसं)। क्षेत्र के गौवंश में बढ़ ते लम्पी बिमारी की रोकथाम के लिए समर्थ सशक्त कोटपूतली अभियान के तहत दवाई तैयार की जा रही है। जिसका विभिन्न गौशालाओं एवं शहर में खुले में घूमने वाले गौवंश में वितरण किया जा रहा है।

अभियान के संयोजक मुकेश गोयल ने पशु चिकित्सकों एवं विशेषज्ञों से लम्पी वायरस के बचाव हेतु पूरी जानकारी लेकर शनिवार को परशुराम मंदिर परिसर में मंदिर समिति सदस्यों के सहयोग से आयुर्वेदिक दवा के लड्डू बनाकर तैयार किये गये। इस आयुर्वेदिक लड्डू में हल्दी पाउडर, काली मिर्च पाउडर, सरस घी, अजवाईन, जीरा, काला नमक, बाजरे का आटा, सोंठ पाउडर, मुलेठी, काला जीरी तथा आवंले का पाउडर शामिल किया गया है। गोयल ने बताया कि यह आयुर्वेदिक

गायों के लिए आयुर्वेदिक लड्डू बनाते लोग।

दवा का लड्डू आयुर्वेदिक चिकित्सकों की देखरेख में क्षेत्र के खुले में घुमने वाले गौवंश को प्रतिदिन सुबह-सांय एक-एक लड्डू दिया जायेगा। जिससे गौवंश की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ कर लम्पी जैसे भयानक रोग से लड़ सकें एवं इसके संक्रमण का प्रकोप कम हो। इस अवसर पर आयुर्वेदिक दवा तैयार करते समय मंदिर परिसर में नरेश महाराज, राधे राधे महाराज, वैद्य नागेन्द्र शर्मा, गोपाल शर्मा, एडवोकेट बजरंग लाल शर्मा, राजेश सराधना, प्रफुल्ल रमन, सीताराम बंसल, प्रमोद कुमार सैनी (गुरूजी), दयाराम कुमावत, देशराज सैनी व घनश्याम कुमावत सहित अन्य लोग मौजूद थे।

जवाई बांध का गेज 56 फीट के पास पहुंचा

पाली, (निसं)। पाली, जालोर, सिरोही की प्यास बुझाने वाला जवाई बांध अब भराव क्षमता के करीब पहुंच गया है। शनिवार शाम तक 56 फीट के करीब पहुंच गया। अगर एक अच्छी बारिश हो गई तो 59 फुट पर पहुंचने पर जवाई बांध की करीब 2 फाटक खोल दिए जाएंगे। करीब 4 वर्ष पहले पूर्व विधायक मदन राठौड़ की मौजूदगी में दो फाटक खोले गए थे। जवाई बांध भरने के कारण जिले वासियों के साथ जलदाय विभाग सिंचाई विभाग के चेहरे भी खिल गए हैं। किसानों में भी खुशी की लहर है कि इस बार उन्हें पूरी सिंचाई के लिए पाण मिलेगी। प्रशासन द्वारा सिरोही जिले के करीब 73 गांव बढ़ा दिए गए हैं। पाली जिले के करीब 70 गांव को जवाई बांध का पानी मिलेगा, जिससे जवाई बांध का भार और बढ़ेगा।

गौशाला प्रबंधन की सतर्कता व पूर्व तैयारी से सैंकड़ों गौवंश को लम्पी वायरस से बचाया

निवाई, (निसं)। उपखण्ड क्षेत्र में श्री दामोदर गौशाला व गांव किवाडा में स्थित श्री दादूदयाल गौशाला के प्रबंधन ने सैकडों गायों को वायरस से बचा लिया है। दामोदर गौशाला में कुल 223 गायें व बछडे हैं। इनमें से एक गाय ही लम्पी वायरस की चपेट में आई है जिसे तुरन्त आईसोलेट कर दिया गया और उपचार शुरू करवा दिया। इससे अन्य गायों में वायरस नहीं फैल पाया। शेष सभी गायों को वायरस से बचाने के लिए टीकाकरण भी करवा दिया। इसी प्रकार संत प्रकाशदास महाराज के निर्देशन में चल रही श्री दादूदयाल गौशाला में एक भी गाय वायरस की चपेट में नहीं आई है। गौशाला प्रबंधक रामेश्वर मास्टर ने बताया कि गौशाला में कुल 233 गायें हैं। दो आईसोलेशन वार्ड बनाए गए हैं। इन वार्डो में बाहर से वायरस की चपेट में आई गायों को आईसोलेशन कर उपचार किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि नियमित रूप से चिकित्सक गौशाला

दादूदयाल गौशाला आश्रम में बनाए गए आईसोलेशन सेन्टर में रोगग्रस्त गायों को रखा जा रहा है।

पहुंचकर गायों की देखभाल करने के साथ ही उनका उपचार भी कर रहे हैं। उन्होंने यह भी बताया कि इसी प्रकार आवारा गौ-वंश के उपचार के लिए गौशाला प्रबंधन की ओर से गांव झिलाय में भी दो आईसोलेशन सेन्टर बनाए गए हैं। रोगी गायों का भामाशाहों के सहयोग से उपचार करवाया जा रहा है। इसी प्रकार हरभांवता आश्रम में स्थित गौशाला में कुल 250 गायें हैं। लम्पी की चपेट में आने से करीब गौशाला की 20 गौ-वंश की मौत हो गई। शिवदयाल गुर्जर ने बताया कि गौशाला में लगभग 55 लीटर दूध होता था। वायरस के बाद 20 लीटर दूध की कमी आई है। उन्होंने बताया कि भामाशाह के सहयोग से गायों के उपचार के लिए दवाईयों की व्यवस्था की गई है।

इसके साथ पशु चिकित्सक भी समय-समय पर गौशाला पहुंचकर गायों का उपचार कर रहे हैं। वायरस की चपटे में आई गायों के लिए आईसोलेटर सेन्टर बनाया हुआ है। लुहारा पंचायत के 3 गांव में लम्पी वायरस से अब तक 25 गोवंश की मृत्यु हो चुकी है। सभी गायों को पंचायत प्रशासन ने जेसीबी की सहायता से दफनाया। ग्राम विकास अधिकारी भारत सिंह सोलंकी ने बताया कि लुहारा में 5 गायों की लम्पी वायरस से मौत हो चुकी है। लम्पी वायरस से मरते सभी गायों को पंचायत प्रशासन ने जेसीबी की सहायता से दफना दिया है। सरपंच बिन्दू कंवर ने बताया कि पंचायत के हर गांव में आइसोलेशन सेंटर बना दिया गया है जिनमें वायरस से संक्रमित ग्रसित गायों को रखा जाने लगा है।

राशिफल रविवार 11 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वाभाद्र पद नक्षत्र प्रात: 8:02 तक, शूल योग दिन 11:59 तक, कौलव करण दिन 1:15 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग प्रात: 8:02 से सूर्योदय तक है। राजयोग दिन 1:15 से सूर्योदय तक है। आज क्षमावाणी पर्व और पडवा ढोक (जैन) और दोज का श्राद्ध है। आज अशून्य शयन व्रत, पंचक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:46 से 9:19 तक, लाभ-अमृत 9:19 से 12:23 तक, शुभ 1:56 से 3:28 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:14, सूर्यास्त 6:33

मेष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।

वृष

आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

मिथुन

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को दिन के मध्यान्ह पूर्व करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

कर्क

धार्मिक-सामाजिक समारोह कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। धार्मिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

सिंह

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

कन्या

परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण और आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

तुला

अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

वृश्चिक

अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा।

धनु

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मकर

परिवार में शुभ और मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा और मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

मन:स्थिति ठीक रहेगी। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। आज आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।